

## डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

शिक्षा परिवर्तन की उत्प्रेरक शक्ति होती है

विद्यार्थी अपने जीवन के मूल्यों को समझें

शिक्षक विद्यार्थियों को व्यवहारिक, सामाजिक तथा नये-नये  
अनुसंधानों से अवगत कराएं—

श्रीमती आनंदीबेन पटेल

लखनऊ : 20 दिसम्बर, 2021

शिक्षा-दीक्षा का उद्देश्य केवल उपाधि प्राप्त करने तक सीमित नहीं है। ज्ञान की नींव पर ही प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। शिक्षा परिवर्तन की उत्प्रेरक शक्ति होती है और हमारे युवा सामाजिक परिवर्तन के सर्वाधिक शक्तिशाली कारक हैं। ये विचार उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने आज डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के 26वें दीक्षान्त समारोह में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि दीक्षान्त समारोह के अवसर पर विद्यार्थी अपनी कड़ी मेहनत से लक्ष्यों की प्राप्ति कर सफलता का प्रतिफल प्राप्त करते हैं।

इस अवसर पर राज्यपाल जी ने मेधावी छात्रों को 107 स्वर्ण पदक एवं 1224 उपाधियों का वितरण किया तथा उपाधियाँ प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों एवं पदक विजेताओं को मंगलमय एवं कीर्तिमान जीवन की शुभकामनाएं दी।

राज्यपाल जी ने विद्यार्थियों को प्रेरित किया और कहा कि विद्यार्थी जीवन में कुछ पाने के लिए हमेशा मन में सीखने की इच्छा को बनाएं रखें। क्योंकि ज्ञान का कोई अंत नहीं होता है। अपने जीवन के मूल्य को समझें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी आत्मनिर्भर भारत की सफलता के सारथी बनें। इसके साथ ही अनेक नई ऊंचाइयों को प्राप्त करें। राज्यपाल जी ने कहा कि यदि शिक्षित युवाओं को उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाए तो वे समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। एक समृद्ध जीवन जीने के लिए शिक्षा का होना जरूरी है और किसी भी देश का भविष्य उसके नागरिकों के शैक्षणिक स्थिति पर निर्भर करता है।

कुलाधिपति जी ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों से अपील की कि वे बदलते समय और सन्दर्भों के साथ अपने आपको अपडेट रखें। केवल पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन ही विद्यार्थियों को न कराएं, बल्कि उन्हें व्यवहारिक, सामाजिक तथा नये-नये अनुसंधानों से भी

अवगत कराएं। उन्होंने कहा कि अच्छा शिक्षण तभी सार्थक होगा जब उससे विद्यार्थी हर क्षण कुछ न कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित हों।

राज्यपाल जी ने विश्वविद्यालय द्वारा नई शिक्षा नीति के अनुरूप स्नातक पाठ्यक्रम के संचालन एवं क्षेत्रीय भाषाओं के पठन-पाठन केन्द्र के आरम्भ करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस नीति में मातृ-भाषाओं पर विशेष जोर दिया गया है। मातृभाषा में शिक्षा दिए जाने से यह विद्यार्थियों को उनकी पसन्द के विषय और भाषा को सशक्त बनाने में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय भाषा के अध्ययन से क्षेत्र विशेष की भाषा के माध्यम से वहां की अमूल्य साहित्य, संस्कृति और सभ्यता का वैश्विक स्तर पर सम्प्रेषित करने में सफलता प्राप्त होगी।

राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा दस आंगनवाड़ी केन्द्रों को गोद लिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय इसी तरह अपने आस-पास के शैक्षणिक विकास हेतु सदैव तत्पर रहे। इसके साथ ही जिन आंगनवाड़ी केन्द्रों को सुविधा सम्पन्न बनाया है, वहां जाकर देखें कि वहां पर बच्चे किस प्रकार से पठन-पाठन कर रहे हैं। ऐसा करने से बच्चों में भी आत्मविश्वास जागेगा। राज्यपाल जी ने कहा कि विद्यार्थी अयोध्या स्थित सरयू नदी के तट पर समय-समय पर जाकर घाटों और किनारों को स्वच्छ और निर्मल बनाने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम का भव्य मन्दिर बना रहा है। यहां पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक आयेंगे, यहां की स्वच्छता को देखेंगे तो उसका श्रेय आपको भी जायेगा।

उन्होंने आजादी का अमृत महोत्सव पर चर्चा करते हुए कहा कि सन् 2047 में जब हमारा देश आजादी का शताब्दी समारोह मनायेगा तब आज के युवा देश का नेतृत्व कर रहे होंगे। उन्होंने कामना की कि विद्यार्थी देश को विकास के ऐसे शिखर तक पहुंचाने में सक्षम बनें, जो हमारी कल्पना से भी बहुत आगे हो।

राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने कार्यक्रम में आमंत्रित प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को पठन-पाठन सामग्री एवं फल वितरित किया तथा त्रिनिडाड एवं टोबेगो के राजदूत डा० रोजर गोपाल को डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की। राज्यपाल जी ने विश्वविद्यालय की स्मारिका का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रविशंकर सिंह सहित शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

-----

